कलरव कुंज
प्रकृति, जीव-दया एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित एक अभिनव शिक्षण पहल

"प्रकृति हमारी संस्कृति है, करुणा हमारा संस्कार है और शिक्षा हमारे व्यक्तित्व का आधार है।"

भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपरा सदैव यह संदेश देती रही है कि प्रकृति और मानव एक-दूसरे के पूरक हैं। वृक्ष, पक्षी, पशु, जल, वायु और समस्त जीव-जगत केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर तथा जीवन-दर्शन के अभिन्न अंग हैं। वर्तमान समय में तीव्र शहरीकरण, पर्यावरणीय असंतुलन तथा जीवन-मूल्यों में हो रहे परिवर्तन के कारण बच्चों का प्रकृति से प्रत्यक्ष जुड़ाव निरंतर कम होता जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में विद्यालयों की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, जीव-दया, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सतत विकास के संस्कार विकसित करना भी अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए **पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1, कोटा** में **"कलरव कुंज"** की स्थापना की गई। यह एक अभिनव, पर्यावरण-अनुकूल एवं मूल्य-आधारित शिक्षण पहल है, जो विद्यार्थियों को प्रकृति के सान्निध्य में अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) का अवसर प्रदान करती है। यह केवल एक सुंदर परिसर नहीं, बल्कि सीखने, चिंतन करने, अनुभव प्राप्त करने और मानवीय मूल्यों को आत्मसात करने का जीवंत शिक्षण केंद्र है।

कलरव कुंज का संपूर्ण निर्माण **बाँस (Bamboo)** से किया गया है। बाँस एक नवीकरणीय, जैव-अवक्रमणीय तथा पर्यावरण-अनुकूल प्राकृतिक संसाधन है, जिसका उपयोग पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास के सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत करता है। इस संरचना के निर्माण में स्थानीय एवं प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया गया, जिससे विद्यार्थियों के समक्ष हरित अवसंरचना (Green Infrastructure) का एक प्रेरणादायी उदाहरण स्थापित हुआ। यह पहल विद्यालय परिसर को केवल आकर्षक ही नहीं बनाती, बल्कि प्रत्येक विद्यार्थी को यह संदेश भी देती है कि विकास और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के पूरक हैं।

कलरव कुंज की सबसे प्रेरणादायक विशेषता यह है कि प्रतिदिन सैकड़ों पक्षी यहाँ आकर दाना-पानी ग्रहण करते हैं। पक्षियों का मधुर कलरव सम्पूर्ण वातावरण को जीवंत, शांत और सकारात्मक ऊर्जा से भर देता है। विद्यार्थी प्रतिदिन पक्षियों के आगमन, उनके व्यवहार, भोजन की आदतों तथा प्रकृति के साथ उनके संबंध का प्रत्यक्ष अवलोकन करते हैं। यह अनुभव पुस्तकीय ज्ञान से कहीं अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। पक्षियों के प्रति यह आत्मीय जुड़ाव विद्यार्थियों में करुणा, संवेदनशीलता, सह-अस्तित्व और संरक्षण की भावना को सहज रूप से विकसित करता है। धीरे-धीरे वे यह समझने लगते हैं कि पृथ्वी केवल मनुष्यों की नहीं, बल्कि प्रत्येक जीव की समान रूप से साझा धरोहर है।

भारतीय संस्कृति में जीव-दया और प्रकृति के प्रति सम्मान का विशेष महत्व है। हमारे शास्त्रों, पुराणों और लोक परंपराओं में असंख्य उदाहरण मिलते हैं जो प्रत्येक जीव के प्रति करुणा और संरक्षण का संदेश देते हैं। **राजा शिबि** का प्रेरणादायी प्रसंग इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। जब एक असहाय कबूतर उनकी शरण में आया, तब उसकी रक्षा के लिए उन्होंने अपने

शरीर का मांस तक अर्पित कर दिया। यह प्रसंग केवल त्याग की कथा नहीं, बल्कि इस विचार का प्रतीक है कि प्रत्येक जीव का जीवन समान रूप से मूल्यवान है। कलरव कुंज इसी भारतीय जीवन-दर्शन को व्यवहारिक शिक्षा से जोड़ते हुए विद्यार्थियों में जीव-दया, करुणा और नैतिक उत्तरदायित्व के संस्कार विकसित करता है।

कलरव कुंज केवल पक्षियों के संरक्षण का केंद्र नहीं, बल्कि **ओपन-एयर लर्निंग स्पेस** के रूप में विकसित किया गया है। यहाँ नियमित रूप से भाषा शिक्षण, कहानी-कथन, कविता-पाठ, पुस्तक वाचन, समूह चर्चा, कला एवं शिल्प गतिविधियाँ, योग, ध्यान, संगीत, प्रकृति अवलोकन, विज्ञान गतिविधियाँ, पर्यावरण अध्ययन तथा रचनात्मक लेखन जैसी अनेक शिक्षण गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। खुले वातावरण में सीखने से विद्यार्थियों की एकाग्रता, रचनात्मकता, अवलोकन क्षमता तथा अभिव्यक्ति कौशल में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। साथ ही, वे तनावमुक्त वातावरण में आनंदपूर्वक सीखते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली एवं स्थायी बनती है।

यह पहल **राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020)** के मूल उद्देश्यों को व्यवहारिक रूप प्रदान करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति अनुभवात्मक अधिगम, मूल्य-आधारित शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, पर्यावरणीय चेतना, कला-एकीकृत शिक्षण, बहुविषयक दृष्टिकोण तथा समग्र विकास पर विशेष बल देती है। कलरव कुंज इन सभी आयामों का उत्कृष्ट समन्वय प्रस्तुत करता है। यहाँ विद्यार्थी केवल विषय-वस्तु का अध्ययन नहीं करते, बल्कि प्रकृति के साथ संवाद स्थापित करते हैं, पर्यावरणीय चुनौतियों को समझते हैं, सहयोग की भावना विकसित करते हैं तथा अपने अनुभवों से ज्ञान का निर्माण करते हैं। यही वास्तविक अर्थों में समग्र एवं जीवनोपयोगी शिक्षा है।

कलरव कुंज का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह विद्यार्थियों में सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals) के प्रति जागरूकता विकसित करता है। पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था, जैव विविधता का संरक्षण, हरित परिसर का विकास, प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग तथा पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को व्यवहारिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती हैं। वे समझते हैं कि छोटे-छोटे प्रयास भी पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

इस पहल का सकारात्मक प्रभाव विद्यालय के समग्र वातावरण पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग, संवेदनशीलता तथा जिम्मेदारी की भावना में वृद्धि हुई है। वे स्वेच्छा से पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था करते हैं, परिसर की स्वच्छता बनाए रखते हैं तथा पौधों और जीव-जंतुओं की सुरक्षा को अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। शिक्षकों के लिए भी यह स्थान नवाचार आधारित शिक्षण का प्रभावी माध्यम बन गया है, जहाँ वे पाठ्यक्रम को वास्तविक जीवन से जोड़ते हुए विद्यार्थियों को सीखने का समृद्ध अनुभव प्रदान करते हैं।

कलरव कुंज की एक अन्य विशेषता यह है कि यह विद्यालय समुदाय, अभिभावकों तथा आगंतुकों के लिए भी प्रेरणा का केंद्र बन चुका है। विद्यालय आने वाले अतिथि इस नवाचार को केवल एक सुंदर संरचना के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, पर्यावरण संरक्षण और मूल्य-आधारित शिक्षा के अद्भुत समन्वय के रूप में अनुभव करते हैं। यह पहल यह सिद्ध

करती है कि सीमित संसाधनों में भी दूरदर्शी सोच, नवाचार और सामूहिक प्रयासों से ऐसे शिक्षण मॉडल विकसित किए जा सकते हैं, जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में दीर्घकालिक भूमिका निभाते हैं।

वर्तमान समय में जब शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में सफलता तक सीमित नहीं रह गया है, तब कलरव कुंज जैसी पहलें विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला सिखाती हैं। यहाँ वे सीखते हैं कि ज्ञान तभी सार्थक है, जब उसके साथ संवेदनशीलता, करुणा, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व भी जुड़े हों। यही गुण उन्हें भविष्य का जागरूक, उत्तरदायी, पर्यावरण-सचेत तथा मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण नागरिक बनाते हैं।

कलरव कुंज इस विश्वास का सशक्त प्रतीक है कि **प्रकृति केवल संसाधन नहीं, बल्कि हमारी साझा धरोहर है; और प्रत्येक जीव के प्रति करुणा ही सच्ची मानवता की पहचान है।** यह नवाचार विद्यालय शिक्षा को पुस्तकों की सीमाओं से बाहर निकालकर जीवन, प्रकृति और संस्कृति से जोड़ता है। यहाँ शिक्षा केवल सूचना अर्जित करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि संवेदनशील, सृजनशील, उत्तरदायी और नैतिक नागरिक निर्माण का सतत अभियान बन जाती है।

"जहाँ पक्षियों का मधुर कलरव, प्रकृति की हरियाली, भारतीय संस्कृति के जीवन-मूल्य और सीखने का आनंद एक साथ जीवंत होते हैं, वहीं शिक्षा वास्तव में जीवन का उत्सव बन जाती है। 'कलरव कुंज' इसी जीवंत शिक्षा-दर्शन का प्रेरक एवं अनुकरणीय उदाहरण है।"